समता—महिला कला जत्था

सुहास कुमार

सोनिया पानीपत, हरियाणा से हैं। बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा हैं। रुचि है अभिनय करना व साक्षरता अभियान के लिए काम करना। समता कला जत्थे से जुड़ने से केवल शौक पूरा नहीं हुआ है, ज़िंदगी के नज़रिए में एक बदलाव आया है। महिलाओं की समस्याओं के प्रति जागरूक तो वह पहले से ही थीं। सोचती थीं कि क़ानून पढ़कर वकील बनेगीं और महिलाओं की समस्याओं को हल करने की कोशिश करेंगी। समता से जुड़ने के बाद एक नई इच्छा जगी है। समता और भारत ज्ञान विज्ञान समिति से जुड़ कर साक्षरता अभियान में काम करना चाहती हैं।

अनु और चंदन शर्मा क्रमशः कक्षा ग्यारहवीं तथा सातवीं कक्षा की छात्राएं हैं। अनु की मां एक महिला संस्था में काम करती हैं। कला जत्थे की भागीदारी के अनुभव ने उन्हें एक नई समझदारी

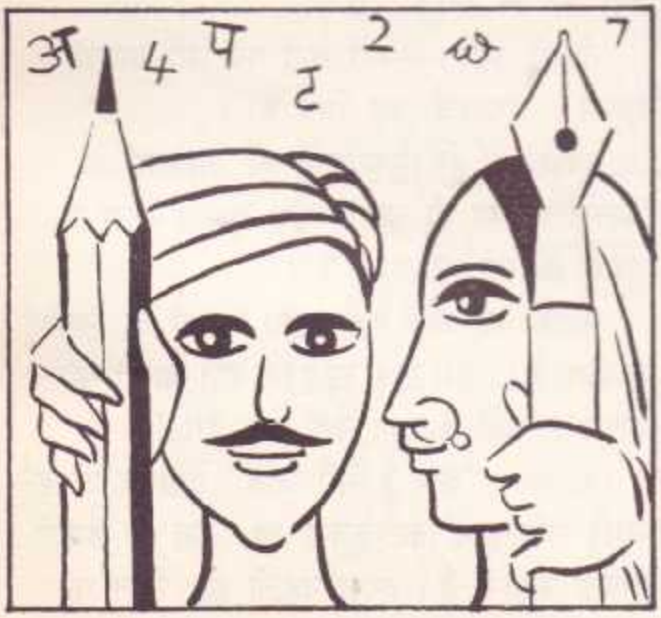

व जागरूकता दी है। नाटक करते करते एक दर्द महसूस किया है। अब उनकी अपनी दुनिया पुरानी जैसी नहीं रही है। चंदन शर्मा जब संवाद बोलती हैं "बहन के आंसू में देखी अपनी जात" पूरे संवेग से उस को महसूस करती हैं।

रूपा भट्टाचार्य कलकत्ते में बारहवीं कक्षा में पढ़ रही हैं। पश्चिमी बंगाल, बिहार, उड़ीसा के मिले-जुले कला जत्थे में शामिल थीं। ढाई वर्ष से बंगीय साक्षरता प्रसार समिति से जुड़ी हैं। जत्थे से जुड़ने का उद्देश्य और राज्यों के लोगों से मिलना नया अनुभव था। यह तो पूरा हुआ ही, ज़िंदगी के प्रति एक नई जागरूकता भी आई है। उड़ीसा, धनकेलि से शुरू हुई जत्थे की यात्रा उड़ीसा, प. बंगाल, बिहार होते हुए झांसी (उत्तर प्रदेश) तक अपने में एक अनुभवों का पिटारा लिए हुए है।

यह सिर्फ रूपा के लिए ही नहीं, जत्थे के तमाम भागीदार लगभग 150 नवोदित कलाकारों के लिए

एक बहुत गहरी तथा व्यापक अनुभूति का समय रहा है। देश के 8 अंचलों से चले कला जत्थे केरल, कर्नाटक, मध्य प्रदेश का जत्था, तमिलनाडू, मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, महाराष्ट्र, गुजरात व मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश का मिलाजुला जत्था, बिहार, मध्य प्रदेश का मिलाजुला जत्था, देश के 20 राज्यों की एक महीने की यात्रा करके ये सभी जत्थे 7 अप्रैल को झांसी पहुंचे। भागीदार कोई पेशेवर कलाकार नहीं है। साक्षरता अभियान से देश में महिलाओं की समस्याओं से, देश में शांति स्थापित करने की कामना से इन जत्थों में शामिल हुए।

उत्साह की नई लहर

हर जत्थे में तीन या चार पुरुष भी हैं। सब मिलजुल कर एक अभियान से जुड़े हैं। जहां जहां से ये जत्थे गुज़रे हैं लोगों में आशा और उत्साह की नई लहर पैदा हुई है। इन लहरों का दूर-दूर तक असर होगा। असर दूर-दूर तक हो तथा बना रहे इसके लिए अभी बहुत रास्ता तय करना है। अभी तो एक शुरुआत हुई है।

जहां जहां से इन राष्ट्रीय कला जत्थों को गुज़रना था पहले ही सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर व पर्चियों तथा समूहों से बातचीत द्वारा इसकी जानकारी दी गई थी। जहां जहां कुछ महिला एवं सामाजिक समूह काम कर रहे हैं, साक्षरता अभियान चल रहे हैं वहां महिलाओं एवं आम लोगों की उपस्थिति ज्यादा थी। महिलाओं को भारी संख्या में सड़क पर निकल कर नाटक देखने के लिए आने में अभी समय लगेगा विशेषकर उत्तरी भारत के राज्य जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि। फिर भी लोगों की प्रतिक्रिया व भागीदारी जत्थे का उत्साह बढ़ाने के लिए काफ़ी थी।

अनुभव

जत्थे के कुछ अनुभवों को बिना बताए हमारी बात अधूरी ही रह जाएगी। बिहार का चांडील गांव, रात के 9 बजे थे। गांव में साम्प्रदायिक तनाव था। जत्थे की प्रस्तुति थी "आज की रात हम जागते रहेंगें।"

औरत—मैं नहीं जाने दूंगी।

पति हाथ झटक कर ऐंठ कर चला जाता है। बाहर लोग उस पर उंगली उठाते हैं। यही है जो दंगे करवाता है। लोगों को मरवाता है। स्त्रियां आपस में मिलती हैं। कब तक हम दंगों का शिकार होते रहेंगें। कुछ स्त्री और पुरुष मिलकर आगे बढ़ते हैं।

एक औरत—मेरे 12 साल के बच्चे को गुंडों ने मार दिया।

दूसरी औरत—मेरी लड़की को वे मेरे सामने उठा कर ले गए।

तीसरी औरत—मेरी बेटी को मेरी आंखों के सामने... (फफक कर रोती है)।

दर्शकों में से सिसकियों की आवाज़, हां बिलकुल ऐसा ही हमारे साथ हुआ। जिस पर गुज़री है वही जानता है।

नाटक का अंत एक शांति कमेटी के निर्माण से होता है। "हम सब आज की रात जागते रहेंगें। अपने इलाकों में दंगा नहीं होने देंगें।"

नाटक—"क्या है मेरी जात" देखकर जगह-जगह महिलाओं का कहना था "यह तो हमारी अपनी कहानी है। आज पहली बार खुल कर

सबके सामने आई है।" उन्होंने पूरे ध्यान से नाटक देखे। आंखों में आंसू भी आए। अच्छे भी लगे। नए सवाल मन में लेकर वे वापस गईं। नाटकों के प्रदर्शन के दौरान पुरुष दर्शक ही ज्यादा थे। उन्होंने भी नाटकों को पसंद किया।

साक्षरता, समानता व शांति का संदेश, गीतों व नाटकों द्वारा लोगों तक पहुंचा।

औरत की पहचान

औरत—एक औरत जिसके लिए तुम्हारी बेहूदा शब्दावली में एक शब्द भी ऐसा नहीं जो उसके महत्व को बयान कर सके।

औरत—जिसके हाथों को दर्द की पैनी छुरियों ने घायल कर दिया है। एक औरत जिसका बदन अंतहीन कमर तोड़ मेहनत से टूट चुका है। एक औरत जिसकी खाल में रेगिस्तान की झलक दिखाई देती है। जिसके बालों से फैक्ट्री के धुएं की बदबू आती है। जो अपने मज़दूर भाइयों के कंधे से कंधा मिलाकर मैदान पार करती है। एक औरत जो मजदूर किसान की रचनाकार है।

औरत—मैं खुद भी मज़दूर, किसान हूं। एक औरत जिसके सीने में गुस्से से फफकते नासूरों से भरा एक दिल छिपा है। एक औरत जिसकी आंखों में आज़ादी की आग के लाल साए लहरा रहे हैं। एक औरत जिसके हाथ काम करते करते सीख गए हैं कि मुक्ति का झंडा कैसे उठाया जाता है।

जागो जागो जागो जागो जागो जागो

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई—हमारा आदर्श, हमारी शान—के नगर में 8 और 9 अप्रैल को एक बड़ा सम्मेलन व रैली हुई। सम्मेलन में 500 से अधिक व रैली में हजारों की संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। हमारा उद्देश्य है देश में पूर्ण साक्षरता, महिलाओं को समान दर्जा दिलवाना तथा देश में अमन और चैन फैलाना। आइए मिल कर वादा करें हम सब साझादारी, भागीदारी से इस काम को आगे बढ़ाएंगें।

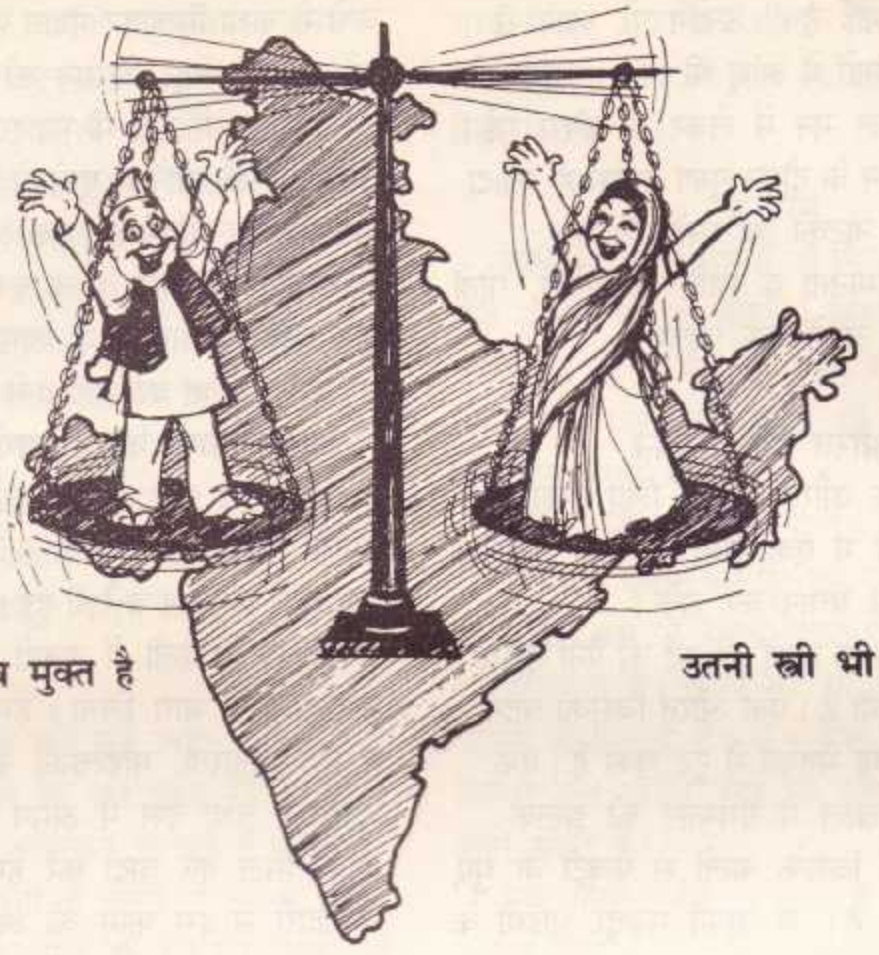

समानता पर स्थित समाज हमें चाहिए
जितना पुरुष मुक्त है, उतनी स्त्री भी चाहिए।
क्यूं जनम से इस तरह अछूत होती नारियां
पहला बेटा शुक्रिया, बेटी होती गालियां
नन्हीं मुन्नी बोझ कहते शर्म आनी चाहिए।

लड़का मांगता खिलौना, मिलती कार गाड़ियां
लड़की भी ललचाती, मिलता चूल्हा दूल्हा गुड़ियां

इस तर्कहीन फर्क से सतर्क होना चाहिए

डिग्रियां हासिल करने बेटा भेजा अमरीका
मेडिकल की फीस बढ़ते बंद पढ़ना बेटी का
पढ़ाई में न जॉब में, न फर्क होना चाहिए।

देखो बात शादी की, क्यों दिखाते लड़कियां
सजा के सबके सामने पेश करते पुतलियां
यह दो मिनट की पेशगी बंद होनी चाहिए।

शादी होते नाम भी बदले सिर्फ नारियां
क्यों सहे प्रधानता पुरुष की जहां तहां
प्रधानता की संस्कृति हमें कभी न चाहिए।

क्यों अकेले स्त्री ही पहने, शादी की परछाइयां
क्या बुरा, पुरुष पहने गहने और चूड़ियां
शादी-शुदा आदमी क्यों न जानना चाहिए
जितना पुरुष मुक्त है उतनी स्त्री भी चाहिए।

(बिहार से प्राप्त गीत—समता जत्था के दौरान प्रस्तुति—उड़ीसा, वेस्ट बंगाल बिहार जत्था)